सत्र - 2022-23

Department of sanskrit

Programme outcomes :-

B.A.(Sanskrit):-

1.विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के काव्यग्रन्थों,व्याकरण ,छंद-अलंकार आदि के बुनियादी स्तर से ग्रन्थों से परिचय की प्राप्ति ताकि वे भाषा एवं साहित्य दोनों को समझ लेवे।

2.संस्कृतसाहित्य के इतिहास के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति ताकि विद्यार्थी संस्कृत ग्रंथो से परिचित होवे।

3. भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपराओं तथा नैतिक मूल्यों का विकास।

M.A.(Sanskrit):-

1.विद्यार्थी संस्कृत माध्यम से अध्ययन करते हुए न केवल संस्कृत का सैद्धांतिक अपितु व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।संस्कृत संभाषण कौशल का विकास करते हुए संस्कृत का संभाषण की भाषा(Language of conversation)के रूप में विकास।

2.प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में निहित ज्ञान का अर्जन कर भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का अध्ययन। साथ ही संस्कृत के आधुनिक कवियो का अध्ययन कर संस्कृत के नवीन साहित्य का ज्ञान प्राप्त करना।

3.विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास।

4.प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृत ग्रन्थ,भाषाशास्त्र आदि विषयों से संबंधित शोध कार्य को बढ़ावा।

Programme specific outcomes:-

B.A(Sanskrit):-

1.संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों का बुनियादी अध्ययन।

2.काव्य निर्माण के महत्त्व तथ्यों यथा-छन्द,अलंकार आदि का बुनियादी अध्ययन।

Edit with WPS Office

3.शिक्षक, सेना में धर्मगुरु, पुरोहित आदि के रूप में रोजगार के अवसर।

4.नैतिक मूल्यों का विकास।

M.A.(Sanskrit):-

1.संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों तथा भारतीय परम्पराओ के विभिन्न पहलुओं का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

2.भाषाशास्त्रीय शोध के अवसर।

3.योगविज्ञान, भाषाशास्त्र,आधुनिक संस्कृत कवि परिचय आदि विषय संस्कृत की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता सिद्ध करते हैं।

4.शिक्षक,भाषावैज्ञानिक, सेना में धर्मगुरु, पुरोहित, लेखक आदि क्षेत्र में रोजगार के अवसर।

Course outcomes:-

B.A. Part 1:-

1.व्याकरण का प्रारंभिक अध्ययन करने से विद्यार्थियों का भाषा पर अधिकार स्थापित होता है।

2.नीतिपरक ग्रन्थों यथा-हितोपदेश आदि के अध्ययन से नैतिक मूल्यों की स्थापना।

3.संस्कृतसाहित्य के इतिहास के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों का संस्कृत ग्रन्थों से परिचय।

B.A. Part 2:-

1. व्याकरण के अग्रिम स्तर का अध्ययन।

2.वाक्य रचना का अभ्यास जिससे संस्कृत लेखन कौशल का विकास।

3.नागानंद, नीतिशतक जैसे ग्रन्थों के अध्ययन से नैतिक मूल्यों का विकास।

4.संस्कृतसाहित्य के इतिहास के अध्ययन से विद्यार्थियों का संस्कृत ग्रन्थों से परिचय।

B.A. Part 3:-

Edit with WPS Office

1.काव्य निर्माण के महत्वपूर्ण तथ्यों जैसे छंद,अलंकार आदि का बुनियादी अध्ययन।

2.संस्कृत निबंध कौशल में वृद्धि।

M.A. 1st semester :-

1.वेद,उपनिषद इत्यादि ज्ञान से परिपूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन।

2.पाली जैसी महत्त्वपूर्ण भाषाओ के अध्ययन से भाषाशास्त्रीय शोध के आयामों में वृद्धि।

3.श्रीमद्भगवतगीता एवं दर्शन का अध्ययन आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है।

4.साहित्यशास्त्र एवं काव्य विषयों पर विद्यार्थियों के ज्ञान की वृद्धि होने से संस्कृतसाहित्य लेखन कुशलता में वृद्धि होती है।

M.A. 2nd semester :-

1.वेद तथा वेदाङ्ग इत्यादि ज्ञान से परिपूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन।

2.भाषवैज्ञानिक के रूप में रोजगार के अवसर की प्राप्ति।

3.दर्शन के अध्ययन से विद्यार्थियों के आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि तथा योग जैसे वर्तमान युग के प्रासंगिक पक्ष की ज्ञानप्राप्ति।

4.संस्कृत साहित्य लेखन कुशलता में वृद्धि।

M.A. 3rd semester :-

1.भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की ज्ञान प्राप्ति।रामायण, महाभारत, पुराण जैसे भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाने वाले ग्रन्थों का ज्ञान।

2.काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र तथा रस-ध्वनि आदि काव्यशास्त्रीय तथ्यों के ज्ञान से संस्कृत साहित्य लेखन कुशलता में वृद्धि।

3.कौटिलीय अर्थशास्त्र जैसे ग्रन्थों का अध्ययन आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में संस्कृत के महत्व का ज्ञान

Edit with WPS Office

प्रदर्शित करते हैं।

M.A. 4th semester :-

1.भारतीय संस्कृति के विस्तृत ज्ञान की प्राप्ति ।

2. संस्कृत के आधुनिक कवियों के अध्ययन के माध्यम से संस्कृत की वर्तमान प्रासंगिकता से विद्यार्थियों का परिचय।

3. छतीसगढ़ के धार्मिक स्थलों के परिचय की प्राप्ति।

4. काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र तथा रस-ध्वनि आदि काव्यशास्त्रीय तथ्यों के ज्ञान से संस्कृत साहित्य लेखन कुशलता में वृद्धि।

5. कौटिलीय अर्थशास्त्र जैसे ग्रन्थों का अध्ययन आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में संस्कृत के महत्व का ज्ञान प्रदर्शित करते हैं।

डॉ. दिव्या देशपाण्डे
विभागाध्यक्ष -संस्कृत
शास. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

Edit with WPS Office